आसान नहीं था पांच हजार से दो करोड़ तक का नोरा का सफर

हमेशा सुर्खियों में रहने वाली ग्लैमर क्वीन नोरा फतेही आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। बॉलीवुड से लेकर साउथ फिल्मों तक, हर जगह उनके डांस मूव्स और स्टाइल ने लोगों को दीवाना बना दिया है, लेकिन जिस मुकाम पर आज नोरा हैं, वहां तक पहुंचना उनके लिए आसान नहीं था। उन्हें यह सफलता रातों-रात नहीं मिली, बल्कि इसके पीछे छिपा है वर्षों का संघर्ष, आत्मविश्वास और हार न मानने का जज्बा। आइए जानते हैं कि नोरा फतेही ने स्ट्रगल के दिनों में क्या सहा है।

कनाडा की गलियों से मुंबई की चमक तक

नोरा फतेही का जन्म कनाडा में हुआ था। वह बचपन से ही फिल्मों और डांस की दीवानी थीं। जब उनके दोस्तों के सपने बिज़नेस या जॉब तक सीमित थे, नोरा के मन में सिर्फ एक ख्वाब था- फिल्मों की दुनिया में पहचान बनाना। उन्होंने तय किया कि चाहे रास्ता कितना भी कठिन क्यों न हो, वो अपनी मंजिल तक जरूर पहुंचेंगी। यही जज्बा उन्हें कनाडा से भारत खींच लाया। सोचिए, एक 22 साल की लड़की, जिसके पास सिर्फ 5000 रुपये थे, जो न भाषा जानती थी, न यहां कोई पहचान, उसने जब मुंबई की धरती पर कदम रखा, तो यह सफर कितना कठिन रहा होगा।

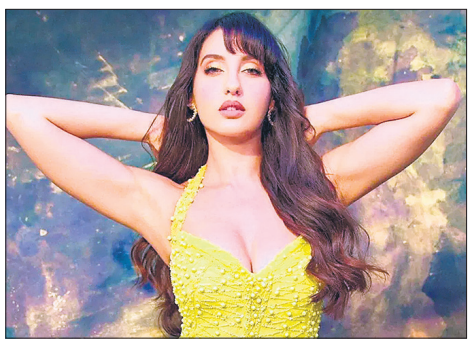

संघर्ष के दिन

नोरा बताती हैं कि शुरुआती दिनों में उनका जीवन बेहद कठिन था। उन्होंने बताया कि "जब मैं भारत आई, मेरे पास सिर्फ 5000 रुपये थे। मैं और नौ लोग एक 3 बीएचके फ्लैट में रहते थे। दो लड़कियों के साथ एक छोटा-सा कमरा शेयर करती थी। उस वक्त सोचती थी- हे भगवान, मैं यहां क्यों आई?" यह वो दौर था जब न उन्हें स्थायी काम मिल रहा था, न कोई गाइड करने वाला था। कई बार ठगी हुई, कई बार गलत लोगों पर भरोसा करने से निराशा हाथ लगी, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

पहला कदम: 'रोर' से शुरुआत

नोरा ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत 2014 में फिल्म 'रोर : टाइगर्स ऑफ द सुंदरबन्स' से की। हालांकि यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर ज्यादा नहीं चली, लेकिन इससे उन्हें इंडस्ट्री में एक पहचान मिली। इसके बाद उन्होंने साउथ फिल्मों की ओर रुख किया, जहां उनके डांस ने सबका ध्यान खींचा। प्रभास स्टारर फिल्म 'बाहुबली : द बिगिनिंग' में उनका डांस सीक्वेंस यादगार साबित हुआ। नोरा की मेहनत रंग लाने लगी थी। उन्होंने धीरे-धीरे अपने कदम मजबूत किए और 'दिलबर', 'कमरिया', 'साकी-साकी' और 'गर्मी' जैसे सुपरहिट गानों के ज़रिए डांसिंग क्वीन बन गईं।

कभी निराश मत होना

नोरा ने अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए कहती हैं कि कई बार उन्हें मानसिक रूप से बहुत झटका लगा। "जब मैं मुंबई आई थी, तब मैं बहुत भोली थी। जो भी मुझे काम का वादा करता, मैं समझती थी कि उसे भगवान ने मेरे लिए भेजा है, लेकिन कई बार लोग मुझे इस्तेमाल करना चाहते थे। उस दौर में मैं डिप्रेशन में चली गई थी और मुझे थेरेपी लेनी पड़ी।" फिर भी उन्होंने खुद को टूटने नहीं दिया। उन्होंने खुद से वादा किया कि वह हमेशा पॉजिटिव रहेंगी और अपनी मेहनत से लोगों को जवाब देंगी।

सपनों की कीमत

आज नोरा फतेही बॉलीवुड की सबसे लोकप्रिय डांसर और एक्ट्रेस में शुमार हैं। उनकी गिनती उन सितारों में होती है, जो एक परफॉर्मेंस के लिए 2 करोड़ रुपये तक चार्ज करती हैं। उन्होंने सलमान खान और कटरीना कैफ की फिल्म 'भारत', वरुण धवन की 'स्ट्रीट डांसर 3D' और जॉन अब्राहम की 'बाटला हाउस' जैसी फिल्मों में अपने परफॉर्मेंस से दर्शकों का दिल जीत लिया है। नोरा सिर्फ डांस नहीं करतीं, बल्कि अपनी परफॉर्मेंस में एनर्जी, ग्रेस और स्टाइल का ऐसा संगम लाती हैं, जो उन्हें दूसरों से अलग बनाता है।

आसान नहीं था खुद की पहचान बनाना

नोरा का कहना है कि "इंडियन एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में विदेशी चेहरे को स्वीकार करना आसान नहीं था। जब मैं यहां आई थी, लोग मुझे सीरियसली नहीं लेते थे। कई बार मुझे सिर्फ ग्लैमर के लिए कास्ट किया गया, लेकिन मैंने दिखाया कि मैं सिर्फ खूबसूरत नहीं, टैलेंटेड भी हूं।" नोरा आज इस मुकाम पर हैं, जहां लोग उन्हें सिर्फ एक डांसर नहीं, बल्कि एक मेहनती और समर्पित आर्टिस्ट के रूप में पहचानते हैं। नोरा फतेही ने अपने संघर्ष और मेहनत से जो मुकाम पाया है, वह किसी प्रेरणा से कम नहीं। उन्होंने साबित किया कि असली सफलता वही है, जो कठिनाइयों से होकर निकलती है। आज वह न केवल एक सफल परफॉर्मर हैं, बल्कि एक ऐसी शख्सियत भी हैं, जो युवाओं को यह संदेश देती हैं कि "खुद पर भरोसा रखो, क्योंकि अगर तुम खुद पर विश्वास करोगे, तो पूरी दुनिया तुम्हारे साथ खड़ी होगी।"

शाहरुख खान को राष्ट्रीय पुरस्कार की एटली ने कर दी थी भविष्वाणी

दक्षिण भारतीय फिल्म निर्देशक एटली ने फिल्म जवान की शूटिंग के दौरान ही बता दिया था कि शाहरुख खान को इस फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिलेगा। वर्ष 2023 में प्रदर्शित एटली के निर्देशन में बनी सुपरहिट फिल्म जवान के लिए शाहरुख खान को हाल ही में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। फिल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी के प्रमोशन के दौरान अभिनेत्री सान्या मल्होत्रा ने बताया कि जवान की शूटिंग के दौरान एटली ने निडरता से भविष्यवाणी की थी कि शाहरुख खान को उनके प्रदर्शन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिलेगा। उन्होंने कहा, "जब हम जवान की शूटिंग कर रहे थे, एटली सर पहले ही बता चुके थे कि शाहरुख खान राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने वाले हैं। वह यह इतनी आत्मविश्वास के साथ कहते थे और अब देखो, उन्होंने नेशनल अवार्ड जीत लिया। वह वास्तव में कमाल के हैं।" यह भविष्यवाणी अब इतिहास बन चुकी है। शाहरुख खान ने अपने 30 साल के करियर में आखिरकार प्रतिष्ठित नेशनल अवार्ड जीता, जो सिर्फ उनके लिए ही नहीं, बल्कि एटली के लिए भी एक मील का पत्थर है, जिनकी निर्देशन और कहानी कहने की क्षमता ने शाहरुख के सबसे यादगार प्रदर्शन को परिपूर्ण मंच प्रदान किया।

फिल्म समीक्षा

तकनीकी रूप से दमदार फिल्म

ऋषभ शेट्टी ने एक बार फिर कंतारा वर्ल्ड में जादू बिखेरा है, उनका लेखन, निर्देशन और अभिनय, सब दमदार है। साथ ही गुलशन देवैया, रुख्मिणी वसंत और जयराम का अभिनय भी दमदार रहा है। तीन साल पहले आई कंतारा सिर्फ 16 करोड़ में बनी थी, इस बार निर्माता ने ऋषभ के लिए 125 करोड़ का बजट रखा था और यह पर्दे पर भी साफ दिखाई देता है। एक बार तो हमें यह एहसास होता है कि इतने बजट में इतनी बढ़िया फिल्म कैसे बन सकती है। फिल्म के दृश्य बेहद शानदार हैं, हर फ्रेम खूबसूरत लगता है। तकनीकी रूप से भी फिल्म एकदम सही है। बीजीएम और गाने कमाल के हैं, मैंने कई सालों बाद किसी फिल्म में शास्त्रीय संगीत सुना है। मुझे ये कहानी बहुत पसंद आई, ऋषभ इसी चीज को भारतीय सिनेमा में लेकर आए।

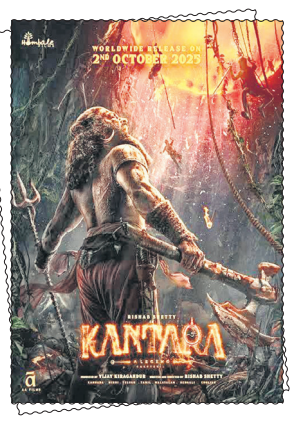

कहानी वहीं से आगे बढ़ती है, जहां कंतारा खत्म हुई थी और फ्लैशबैक में हमें कदंब राज्य दिखाया जाता है। कदंब राज्य का राजा, जो कंतारा वन चाहता है, लेकिन वहीं मर जाता है, फिर उसका बेटा (जयराम) वहां वापस जाने की हिम्मत नहीं करता। जब बेटा बड़ा होता है तो वो राजा बनता है और उसके एक बेटा (गुलशन देवैया) और एक बेटी (रुखमणी वसंत) होती है। बेटे (गुलशन देवैया) को राजगद्दी पर बिठाकर राजा बना दिया जाता है, लेकिन जो बेटा राजा है, वो अय्या के साथ ही रहता है। यहां, कोई एक नवजात शिशु बर्मी (ऋषभ शेट्टी) को कंतारा वन में छोड़ देता है और वहां एक महिला, जिसके कोई बच्चे नहीं हैं, उसकी देखभाल करती है। फिल्म शुरू से अंत तक बांधे रखती है, एक भी फ्रेम हमें बोर नहीं करता। एक्शन कोरियोग्राफी कसी हुई है, युद्ध भी दिखाया गया है, वहां तकनीकें भी अच्छी थीं। हमें यह भी देखने को मिलता है कि उस समय के लोग कैसे धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। स्क्रीन प्ले को उस समय को ध्यान में रखकर और हर चीज को ध्यान में रखकर दिखाया गया है।

समीक्षक- शिवकांत पालवे

एडवेंचर फिल्म इलियो

इलियो एक अमेरिकन एनिमेटेड साइंस फिक्शन एडवेंचर फिल्म है, जिसका निर्माण पिक्सर एनिमेशन स्टूडियो ने वॉल्ट डिज्नी पिक्चर्स के लिए किया है। शानदार म्यूजिक, खूबसुरत सिनेमेटोग्राफी और ढेर सारे क्यूट कैरेक्टर के साथ इलियो मनोरंजन करने में सफल रही। एनिमेशन का अपना ही स्वाद अपना ही मजा है। जब-जब बचपन की तरफ लौटने का मन करता है तो एनीमेटेड मूवी ढूंढ कर छोटे बेटे के साथ देखने बैठ जाता हूं। यह मूवी इलियो नाम के छोटे बच्चे की कहानी है, जिसके माता-पिता नहीं रहे और वो अपनी बुआ ओल्गा के साथ रहता हैं। बुआ वायु सेना में मेजर है, जो अंतरिक्ष यात्री बनना चाहती थी, पर भतीजे की परवरिश के कारण अपना सपना, सपना समझ भूल जाने की कोशिश करती हैं।

इलियो और ओल्गा के बीच संबंध अच्छे नहीं है, जिसके चलते इलियो दूर अंतरिक्ष में दूसरे गृह पर जाने की जिद्द पर आ जाता हैं। एक दिन वो सैन्य ठिकाने से संदेश भेजता है, जिसे सुन एलियंस इलियो को अपने साथ ले जाते हैं। वहां जाकर इलियो क्या-क्या गुल खिलाता हैं यह देखना बड़ा मजेदार हैं।

हालांकि फिल्म साधारण है, जिस तरह की एनिमेटेड फिल्मों का हॉलीवुड में इतिहास रहा है, उस लेवल की तो नहीं है पर आप अगर क्राइम थ्रिलर, एक्शन, हॉरर फिल्में देख देख थक गए हैं तो रिफ्रेश होने के लिए इलियो फिल्म देख सकते हैं। इलियो परिवार के साथ मिलकर देखेंगे तो एक ताजा सिनेमा अनुभव होगा, पर हां बहुत ज्यादा उम्मीद रख कर मत देखिएगा।

समीक्षक-राजदीप जोशी

आलोचनाओं ने मुझे और ज्यादा प्रेरित किया: भूमि पेडनेकर

बॉलीवुड अभिनेत्री भूमि पेडनेकर का कहना है कि आलोचनाओं ने उन्हें और ज्यादा प्रेरित किया है। मिल्केन इंस्टीट्यूट के 12 वें एशिया समिट में दुनियाभर के बड़े लीडरों के बीच, बॉलीवुड अभिनेत्री भूमि पेडनेकर ने अपनी निजी कहानी, हिम्मत और जिम्मेदारी की बात से सबको प्रभावित किया। भूमि पेडनेकर ने बताया कि जब वह अभिनेत्री बनने का सपना देखती थीं, तो उन्हें पर्दे पर अपनी तरह की महिलाएं नहीं दिखती थीं। उन्होंने कहा मुझे हमेशा से पता था कि मैं एक कलाकार बनना चाहती हूं, लेकिन बड़े होते हुए मुझे पर्दे पर अपने जैसी लड़कियां नहीं दिखीं। जब भी मैंने लोगों को अपने सपने के बारे में बताया, तो वे मुझ पर हंसे। उन आलोचनाओं ने मुझे और ज्यादा प्रेरित किया और मैंने सोचा, मैं उन्हें करके दिखाउंगी। भूमि ने कहा कि उनकी पहली फिल्म 'दम लगा के हईशा' ने उन्हें सिनेमा की असली ताकत दिखाई।

ईरानी सिनेमा की महिला सुपर स्टार गोलशिफतेही

मैं ईरानी सिनेमा का शौकीन हूं और शायद मैं ही नहीं विश्व सिनेमा का हर संजीदा दर्शक ईरानी फिल्मों का दीवाना होता है। इन फिल्मों का स्तर अंतर्राष्ट्रीय होता है। माजिद मजीद और दारिश मेहरजुई जैसे ख्यातनाम निर्देशक विश्व फलक पर ईरानी सिनेमा को रचकर अमर हैं। ईरानी सिनेमा की प्रख्यात अभिनेत्री और महिला सुपर स्टार 'गोलशिफतेही फरहानी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है और नेटफ्लिक्स पर सबसे ज्यादा देखी जाने वाली फिल्म एक्सट्रैक्शन में भी काम किया है। इन्हें महज 14 साल की उम्र में नामी निर्देशक दारिश मेहरजुई की फिल्म की 'द पीयर ट्री' में मुख्य भूमिका के लिए चुना गया है। इस भूमिका के लिए गोलशिफतेही को तेहरान में 16 वें 'फज्र इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल' के अंतर्राष्ट्रीय खंड से सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के 'क्रिस्टल रॉक' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उनकी अभिनीत फिल्म 'अबाउट अली' (निर्देशक असगर फरहानी) ने ट्रिबेका फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट फिल्म का व बर्लिन इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में सिल्वर बीयर का अवार्ड जीता। यह इनकी ईरान में प्रदर्शित आखिरी फिल्म थी। बाद में वे लियोनार्डो डिकैप्रियो के साथ फिल्म 'बॉडी ऑफ लाइज' में मुख्य भूमिका में आई। इसमें इनके बिना हिजाब के होने के कारण उन्हें 2009 से ईरान में वापस लौटने और काम करने पर विवाद के चलते वे पैरिस में बस गई। कालांतर में उन्हें फ्रांस में सीजर अवार्ड्स में 'द पेशेंस स्टोन' के लिए 'मोस्ट प्रॉमिसिंग एक्ट्रेस' के अवार्ड के लिए भी नामांकित किया गया।

2017 में आई एक फंतासी फिल्म 'पायरेट्स ऑफ द कैरिबियन' में वे एक समुद्री चुड़ैल शांसा की भूमिका में दिखाई दीं, जिसे दर्शकों ने खूब पसंद किया। 2020 में वे नेटफ्लिक्स पर सबसे ज्यादा देखी जाने वाली एक्शन फिल्म 'एक्सट्रैक्शन' में इन्होंने अविस्मरणीय निक खान का किरदार निभाया। 2023 के बर्लिन फिल्म फेस्ट में इन्हें मुख्य समापन जूरी के सदस्य के रूप में भी चुना गया। फरहानी न केवल पर्यावरण समर्थक है, बल्कि ईरान की तपेदिक उन्मूलन कार्यक्रम की भी संवाहक है। प्रसिद्ध ब्रिटिश रॉक बैंड 'कोल्डप्ले' ने 'स्फेयर्स वर्ल्ड टूर' में फरहानी को आमंत्रित किया था, जिसके लैटिन अमेरिका प्रदर्शन के दौरान दो रात केवल लाइव इवेंट सिनेमा स्पेशल के हिस्से के रूप में कॉन्सर्ट को 70 से अधिक देशों में 3,500 से अधिक सिनेमाघरों में लाइव प्रसारित किया गया था, जो कि एक अपने आप में एक इतिहास है।

जुलाई 1983 में तेहरान के एक थिएटर निर्देशक और अभिनेता और स्टेज अभिनेत्री फहीमेह रहीमिनिया के घर जन्मी गोलशिफतेही का नाम उनके पिता ने रखा था, जिसके मायने होते है 'प्यार करने वाला फूल', जबकि उनका कानूनी नाम राहवार्ड है। उन्होंने पांच साल की उम्र में संगीत और पियानो का अध्ययन शुरू किया और बाद में तेहरान के एक संगीत विद्यालय में प्रवेश लिया लेकर विधिवत ईरानी संगीत की तालीम ली। लगभग 53 से अधिक फिल्मों में काम कर चुकी गोलशिफतेही फरहानी को अनेक अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से नवाजा गया है। 2017 में वे पैरिस से ईबीसा (पुर्तगाल के नजदीक) रहने चली गई, जहां वे आज भी संगीत और सिनेमा के लिए कार्यरत हैं।

-अरविंद सिंह आशिया, लेखक